शोध मंथन Vol. XI No.III July-Sept. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X

Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

नागार्जुन का प्रकृति–चित्रण

प्रीति प्रियम्वदा
(U.G.C. Net) हिन्दी विभाग
देवघर कॉलेज, देवघर, झारखण्ड
Email : preetipriyamvada1011@gmail.com

सारांश

प्रकृति मानव जीवन की सहचरी रही है। मानव जीवन के प्रस्फुटन और विकास में प्राकृतिक सौंदर्य की प्रेरणा का अलग महत्व रहा है। नागार्जुन आधुनिक हिन्दी साहित्य के सृजनशील चेतना के प्रतिनिधि रचनाकार थे। संकल्प से संघर्षशील तथा स्वभाव से अक्खड़ और ईमानदारी नागार्जुन जनता के प्रतिनिधि कवि थे। संकल्प से संघर्षशील तथा स्वभाव से अक्खड़ और ईमानदार नागार्जुन के जीवन और उनकी कविता के बीच कोई फाँक नहीं है। वे जब जीवन की बातें करते हैं तो कविता में करते हैं तथा कविता कहते हैं तो जीवन की। इन्हें राहुल जी का लघु संस्करण समझना चाहिए। यात्रा का वही शौक, अध्ययन का वही अभ्यास और बहुत–सी भाषाओं में अपने को अभिव्यक्त करने की अद्भुत् क्षमता। इस प्रकार नागार्जुन का काव्य बहुरंगी भावराशि का अक्षय स्रोत है।

मुख्य शब्द– *यथार्थवादी, यायावरी, दीर्घजीवी, छन्दोबद्ध, संकल्पबद्ध, बौद्धधर्म, मार्क्सवादी, संवेदनात्मक, कलात्मक, सर्जनात्मक, आत्मानुभूति, बहुरंगी, मसखरी, शरारती और गगनचुम्बी।*

प्रस्तावना

नागार्जुन आधुनिक हिन्दी साहित्य के सृजनशील चेतना के प्रतिनिधि रचनाकार थे। संकल्प से संघर्षशील तथा स्वभाव से अक्खड़ और ईमानदारी नागार्जुन जनता के प्रतिनिधि कवि थे। उनकी कविता में आमलोगों की आशा, आकांक्षा और विद्रोह का स्तर मुखरित होता है। वे प्रगतिशील यथार्थवादी, प्राकृतिक सौंदर्य एवं मानवीय चेतना के कलाकार थे। उनके व्यक्तित्व में एक साथ कबीर का मस्तमौलापन एवं निराला के अक्खड़पन देखने को मिलता है। मैथिलीभाषा के ''यात्री'' एवं हिन्दी के ''नागार्जुन'' की काव्य–साधना एवं मायावादी के सामने ''तरौना के वैद्यनाथ मिश्र'' न जाने कहाँ खो गये। हिन्दी जगत् के अनेकानेक शिखर सम्मान से सम्मानित कवि नागार्जुन ''कीर्तिर्यस्य स जीवति'' के प्रतीक पुरूष बन गये। ''नागार्जुन में सामाजिक जीवन के अनुभवों, प्रगतिशील दृष्टि और राजनीतिक चेतना का सुन्दर समन्वय है। इसलिए वे हमारे सामाजिक और राजनीतिक जीवन के बीच व्याप्त भयंकर विसंगतियों और अन्तर्विरोधों को पहचान लेते हैं और उन्हें अनावृत्त करने के लिए व्यंग्य का सहारा लेते हैं।'' (1)

प्रकृति मानव जीवन की सहचरी रही है। मानव जीवन के प्रस्फुटन और विकास में

प्राकृतिक सौंदर्य की प्रेरणा का अलग महत्व रहा है। कवि–हृदय प्रकृति के मनोरम दृश्यों पर लुब्ध होकर ही काव्य का श्रृगांर करता है। नागार्जुन का काव्य बहुरंगी भाव–राशि का अक्षय स्रोत है। उनके काव्यों में अनेक विविधताएँ हैं। नागार्जुन ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में अधिकारपूर्ण लेखन किया।

''सब मिलाकर उनके बीस काव्य–संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनमें से बहुत सारी ऐसी कविताएँ भी हैं जो सपाट, उबड़,–खाबड़, दलीय और पोस्टरीय हैं। इसके कारण नागार्जुन के मूल्यांकन में बाधाएँ पहुँचती रही है। इन अत्यल्पजीवी कविताओं के अतिरिक्त उन्होंने दीर्घजीवी कविताएँ भी लिखी है। ''दलीय और पोस्टरीय कविताएँ उनके पक्ष को कमजोर करती हैं। किन्तु बेहतर कविताओं के लिए वे ऊर्जा देती हैं।''(2)

''नागार्जुन के भाषिक मुहावरे गाँव के हैं। जहाँ संस्कृत की सधी हुई पदावली मिलगी, वहाँ पर गंवई रंग चढ़ा हुआ है। एक ही कविता में सफलतापूर्वक कई प्रकार की पदावलियों, छन्दों, लयों का प्रयोग करते हैं। छन्दोबद्ध कविताओं में मैदानी नदियों का संयमित प्रवाह है तो मुक्तछंदों में पहाड़ी नदियों की चंचलता। वे शैली की खोज नहीं करते, शैली स्वयं उन्हें खोजती है। जगह–जगह गाँव की धरती का खुरदुरापन अपनी उर्वरता और ऊर्जा के साथ उपस्थित है। उन्होंने ठीक ही कहा है–जन–जन में जो ऊर्जा भर दे, मैं उद्‌गाता उस रवि का'' (3)

नागार्जुन कवि के साथ–साथ प्रमुख उपन्यासकार भी हैं। नागार्जुन ने गरीबी, अभाव को स्वयं भोगा है। सामाजिक दुर्व्यवस्था, ग्रामीण जीवन की स्थिर विपन्नता तथा लाखों चेहरों की मलिनता एवं उदासी को अत्यन्त समीप से देखा है। इसलिए उनकी रचनाओं में स्थितियों का सूक्ष्म रूप तीखे व्यंग्यों के साथ अंकित होते हैं। नागार्जुन जनपक्षधरता के कवि हैं।

''इन्हें राहुल जी का लघु संस्करण समझना चाहिए– यात्रा का वही शौक अध्ययन का वही अभ्यास और बहुत–सी भाषाओं में अपने को अभिव्यक्त करने की वह क्षमता। सिंहल में बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर वैजनाथ मिश्र से नागार्जुन बन गए।'' (4)

''नागार्जुन, सम्प्रति के अतिशय जागरूक जुझारू वैताली है। उनकी दृष्टि काल–घड़ी के डायल पर फुर–फुर चलती सेकेण्ड बतानेवाली सबसे छोटी सुई पर अधिक जमती है, मिनट और घंटा बतानेवाली मोटी बड़ी सुईयों पर कभी–कभार।'' (5)

नागार्जुन के जीवन और उनकी कविता के बीच कोई फाँक नहीं है। वे जब जीवन की बातें करते हैं तो कविता में करते हैं, और कविता कहते हैं तो जीवन की। दोनों की लपटें समान रूप से आगे बढ़ते हुए एकाकार हो जाती है। नागार्जुन ने बच्चों की भावनाओं तथा आजादी के लिए सजग होने की प्रक्रिया का जीवन्त चित्रण किया है। छोटी–छोटी झंडी थामें, प्यारे–प्यारे मुन्ने जो अग्रज पीढ़ी के अनुकरण पर संकल्पबद्ध हो रहे हैं। उनपर उनकी बड़ी साफ–सुथरी रचना प्रस्तुत हुई है।

''नागार्जुन कोरे लेखक नहीं हैं। राजनीतिक आन्दोलनों में शरीक होकर जेल यात्राएँ भी की हैं। मूलतः मार्क्सवादी चेतना से प्रभावित होते हुए भी इनमें उसका कठमुल्लापन नहीं है। गांधी जी के प्रति अपार श्रद्धा है नागार्जुन में। सुभाषचन्द्र बोस से भी पत्र व्यवहार था। जय

प्रकाश द्वारा संचालित आन्दोलन में शरीक होकर वे जेल भी गए थे। लेकिन आन्दोलन की सारहीनता की प्रतीति होने पर उसके विरूद्ध कविता लिख डाली।'' (6)

नागार्जुन वेश–भूषा, चाल–ढ़ाल, रहन–सहन, विचार–आचरण, पठन–गायन मुद्रा–संकेत, भाषा–छंद, लय–ताल सभी दर्षष्टियों से समूह में समूह में के और समूह के लिए समर्पित कवि हैं। कवि ने अपने यायावर जीवन में प्रकृति सौंदर्य को प्रत्यक्ष देखा, परखा और स्वनेत्रों से प्रकृति प्रदत्त मधुर–रस का पान किया है। उसने पावस, शरद् और वसंत तीनों ऋतुओं में हिमालय की सुषमा का वर्णन किया है। उनकी वाणी में रागात्मकता का तत्व मिलता है। सम्मवतः कबीर के बाद व्यंग्य का इतना बड़ा कवि दूसरा नहीं है। भारत में ब्रिटेन की रानी के आगमन पर स्वागत की धूम–धाम देखकर नागार्जुन ने कहा–''आओ रानी हम ढ़ोयेंगे पालकी, यही हुई है राय जवाहर लाल की।'' यहाँ तीख व्यंग्य देखा जा सकता है।

''डॉ. रामदरश मिश्र ने लिखा है कि नागार्जुन की कविताएँ मुख्यतया तीन तरह की है। कुछ कविताएँ गम्भीर, संवेदनात्मक और कलात्मक हैं, जिसमें कवि ने मानव की रागात्मक छवि अंकित की है और मानवीय सम्मावनाओं के प्रति आस्था व्यक्त की है। दूसरी कोटि की कविताएँ वे हैं जो सामाजिक कुरूपता राजनैतिक अव्यवस्था और धार्मिक अहं अंधविश्वास पर चुभते हुए व्यंग्य करती है। तीसरी कोटि में वे कविताएँ आती हैं जो उद्‌बोधनात्मक और अपेक्षाकृत हल्के स्तर की है।'' (7)

''कवि की हैसियत से नागार्जुन प्रगतिशील और एक हद तक प्रयोगशील भी हैं। उनकी अनेक कविताएँ प्रगति और प्रयोग के माणिकांचन संयोग के कारण एक प्रकार के सहजभाव सौन्दर्य से दीप्त हो उठी हैं। शिष्ट गम्भीर हास्य तथा सूक्ष्म चुटीले व्यंग्य की दर्षष्टि से भी नागार्जुन की कुछ रचनाएँ अपनी एक अलग पहचान रखती हैं। इन्होंने कहीं–कहीं सरस, मार्मिक, प्रकृति–चित्रण भी किया है। नागार्जुन की भाषा लोकभाषा के निकट एवं हष्दयग्राही है।'' (8)

नागार्जुन ने सिर्फ व्यंग्य एवं राजनीति की कविताएँ ही नहीं लिखी हैं बल्कि गाँव जनपद, प्रकृति, प्रेम–सौन्दर्य और मेहनतकश आम आदमी पर भी काफी कुछ लिखा है। उनकी कविताओं में संवेदना के अनेक रूप–रंग और स्तर दिखाई पड़ते हैं। नागार्जुन अपने काव्य में साधारण शब्दों के साथ–साथ तत्सम शब्दों का प्रयोग करते हैं। अनेकानेक छन्दों और रूपों का इस्तेमाल भी इन्होंने किया है। वे रोजमर्रा के बिम्बों और शब्दों से अपनी कविता बनाते हैं। नामवर सिंह ने इन्हें सच्चे अर्थों में स्वाधीन भारत का प्रतिनिधि जन–कवि माना है। उन्होंने कहा है कि इस बात में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं है कि तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी कविता की पहुँच, किसानों की चौपाल से लेकर काव्य रसिकों की गोष्ठी तक है। ''नागार्जुन की गिनती न तो प्रगतिशील कवियों के संदर्भ में होती है, न नई कविता के प्रसंग में होती है, फिर भी कविता के रूप संबंधी जितने प्रयोग अकेले नागार्जुन ने किए हैं, उतने शायद ही किसी ने किए हो। कविता की उठान तो कोई नागार्जुन से सीखे और नाटकीयता में तो वे जैसे लाजबाव ही हैं। जैसी सिद्धि छन्दों में, वैसा ही अधिकार वेछन्द या मुक्त छन्द की कविता पर। उनके बात करने के हजार ढंग हैं और भाषा में भी बोली के ठेठ शब्दों से लेकर संस्कृत की संस्कारी पदावली

तक इतने स्तरीय् हैं कि कोई अभिभूत हो सकता है। तुलसीदास और निराला के बाद कविता में हिन्दी भाषा की विविधता और समृद्धि का ऐसा सर्जनात्मक संयोग नागार्जुन में ही दिखाई पड़ता है।''(9)

''नागार्जुन का व्यंग्य कहीं–कहीं अति तीक्ष्ण बनकर औचित्य की सीमा का उल्लंघन कर बैठता है।''(10)

''नागार्जुन की व्यंग्य रचना में कबीर की तल्खी, भारतेन्दु की करूणा और निराला की विनोदवक्रता का विलक्षण सामंजस्य है। अन्य व्यंग्यकारों से नागार्जुन की भिन्नता इस अर्थ में है कि जहाँ अन्य लोग सोच–विचार कर किसी रचना को व्यंग्य बहुल बनाते हैं, वहाँ नागार्जुन में व्यंग्य एक जन्मजात संस्कार के रूप में है।'' (11)

शिव कुमार मिश्र ने इनके व्यंग्य के विभिन्न स्तरों की चर्चा चुटीले अंदाज में की है।''सामाजिक पदार्थ के उद्घाटन के बड़े सशक्त माध्यम के रूप में नागार्जुन ने इन व्यंग्यों का इस्तेमाल किया है। नागार्जुन यों भी इस हथियार को चलाने में माहिर हैं। नए–नए अंदाज में विभिन्न मनस्थितियों में, कभी हल्के–फुल्के कभी बड़े मारक और गहरे रूप में कभी क्रोध से आगबबूला होते हुए, कभी मसखरी करते हुए, कभी नितान्त गम्भीर बनकर और कभी निहायत शरारती मुद्रा में पात्र, प्रसंग और अवसर के अनुरूप भाषा और शैली, लय और तान के अनूठे मेल–मिलाप में वे इन व्यंग्यास्त्रों को चलाते हैं।'' (12)

नागार्जुन को चन्द्रमा की मधुर उज्जवल चांदनी, कभी तारों की झिलमिलाहट, कभी सरिता का कल–कल स्वर कभी भौरों की गुन–गुनाहट, कभी पक्षियों का कलरव, और कभी बादलों की गड़गडाहट उनके कोमल और सुकुमार हष्दय को अपनी ओर खींच लेती हैं। फिर तो वह पुस्तक के पन्नों में गुंथे हुए सौन्दर्य के तारों को छोड़ प्रकृति के उन्मुक्त गगन में इठलाती, मुस्कुराती एवं नाचती सुषमा को देखने लिए दौड़ पड़ता है। इसी अन्तः प्रेरणा से प्रेरित होकर कवि नागार्जुन हिमालय की पर्वत श्रेणियों में घिरते बादल को देखने के लिए दौड़ रहा है। और उसके हष्दय से उस अनुपम सौन्दर्य का जो बोध होता है उसीकी सुन्दर अभिव्यक्ति है। ''बादल को घिरते देखा है।''

पावस ऋतु में पहाड़ की चोटी बादलों से घिरी रहती है। उनसे मोती जैसे छोटे–छोटे और चमकीले तुहिन–कण मानसरोवर के कमलों पर झरते रहते हैं। ऐसे समय में समतल प्रदेश से आनेवाले हंस वहाँ कमलनाल में उपस्थित खट्टे–मीठे विसतंतु को तिरते रहते हैं।

वसंत ऋतु में उषा की कोमल किरणें पर्वत शिखरों को सुनहरा बना देती हैं। ''युग–युग से अभिशापित जीवन जीने को मजबूर चकवा–चकवी के जीवन में भी मिलन की आकांक्षा जगती है। वहाँ दूर–दूर तक फैले शैवाल पर चकवा–चकवी का प्रेम मिलन होता है। कवि ने इसे एक नये शब्दावरण में बांधने की कोशिश की है–

शैवालों की हरी–दरी पर प्रणय कलह छिड़ते देखा है।

कवि का वर्णन सुन्दर, सहज एवं आकर्षक है। बसन्त के इन्ही मादक वातावरण में कवि ने कस्तूरी मृग को अपनी नाभि से निकलने वाले सुगन्ध के पीछे परेशान देखा है।''

कवि सत्याग्रही है। वह कालिदास के मेघदूत में वर्णित आकाशगंगा एवं यक्ष द्वारा भेजे गए मेघदूत का कहीं पता–ठिकाना नहीं पाता है। वह सोचता है कि वह कवि की कल्पना थी। वह यह भी सोचता है कि यक्ष की विरह में तड़पना और रोना कविवर कालिदास की आत्मानुभूति थी। वह कालिदास से पूछता है–

पर पीड़ा से पूर–पूर हो   थक–थक कर और चूर–चूर हो
अमल धवल गिरि के शिखरों पर   प्रियवर तुम कब तक सोये थे ?
रोया यक्ष कि तुम रोये थे ?   कालिदास सच–सच बतलाना।

शरद् ऋतु में हिमालय पर होने वाली घटना का वर्णन करते हुए कवि की आँखें स्वीकारती हैं–

''मैंनें तो भीषण जाड़ों में, नभचुम्बी कैलाशशीष पर
महामेघ को झंझानिल से गरज–गरज भिड़ते देखा है।''

अंत में कवि ने हिमालय में बसने वाली वनवासी किन्नरों के कलात्मक रहन–सहन का वर्णन किया है देवदारू के बाग में लाल और श्वेत भोजपत्रों से शिल्पित कुटी के बाहर नर और नारी फूलों से अपने आपको सजा कर संगीतमय वातावरण में जिस प्रकार से मदिरा का पान करते हैं– वह दृश्य सभी को सहज रूप में अपनी ओर आकर्षित करता है।

हम देखते हैं कि नागार्जुन का काव्य बहुरंगी भावराशि का अक्षय स्रोत है। उनका काव्य जीवन का काव्य है। उनकी भाषा में सरलता, सरसता और स्वतः प्रवाह का आकर्षण है। यही कारण है कि उनके काव्य में अभिव्यक्ति का आकर्षण एवं गहराई दोनों हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1) हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नागेन्द्र पृ0– 632
2) बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– पृ0– 412
3) उपरोक्त– पृ0– 414
4) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह– पृ0– 248
5) बोध और व्याख्या– साहित्यिक निबंध, डॉ. कामेश्वर शर्मा पृ0– 369
6) आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह– पृ0– 248
7) प्रगतिवाद और उसके प्रमुख कवि साहित्य संदर्भ और मूल्य– पृ0– 39
8) हिन्दी साहित्य कोश (भाग–2) सं.– धीरेन्द्र वर्मा पृ0– 296
9) नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताएँ, भूमिका– पृ0– 9–10
10) आधुनिक कविता का मूल्यांकन– पृ0– 62
11) समकालीन हिन्दी कविता में व्यंगय विद्रूप, नई कवित सं0–वासुदेव नन्दन प्रसाद।
12) नागार्जुन चुनी हुई रचनाएँ– 2 भूमिका– पृ0– 17